बाल-मनोविज्ञान

* ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज के समय में बहुत-से माता-पिता बच्चों के व्यवहार से परेशान और चिन्तित रहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि बच्चा उनके मनोनुकूल व्यवहार करे, उसका तरीका क्या है? जब बच्चा जन्म लेता है, वह शारीरिक-मानसिक दोनों रूपों से अविकसित रहता है। मान लीजिए, पिता की 25 वर्ष की आयु में बच्चे का आगमन हुआ। जब बच्चा एक दिन का था तो उसका पिता उससे (25 वर्ष × 365) 9125 गुणा दिन बड़ा था। जब बच्चा दो दिन का हुआ तो पिता केवल 4563 गुणा दिन ही बड़ा रहा। जब बच्चा 100 दिन का हुआ तो पिता मात्र 92 गुणा दिन बड़ा रह गया और जब बच्चा 8 वर्ष का हुआ तो पिता आयु में लगभग 4 गुणा बड़ा ही रह गया। इस प्रकार पुत्र की शारीरिक वृद्धि के साथ-साथ पिता का शारीरिक बड़ापन क्रमश: घटता जाता है।

तीव्र मानसिक-बौद्धिक विकास

शरीर के साथ-साथ बच्चा मानसिक और बौद्धिक रूप से भी विकसित होता जाता है। जब वह जन्मा, कुछ नहीं जानता था पर धीरे-धीरे वातावरण से, मित्र-सम्बन्धियों और आपसे कुछ-कुछ सीखता गया। चूंकि वह अन्दर से खाली है इसलिए चारों ओर की बातों को अपने में भर लेता है। अपने से बड़ों की हर बात को ठीक समझता है और सबका अनुकरण करने की कोशिश करता है। फिर वह स्कूल जाता है, यदि उसकी कक्षा से सीधे जुड़े हुए पाँच शिक्षक और 50 विद्यार्थी भी हैं तो प्रतिदिन वह इन 55 लोगों के बीच 8 घन्टे रहता है और पढ़ाई के साथ-साथ अपने साथियों से भी जानकारियाँ हासिल करता है, इससे उसका मानसिक-बौद्धिक विकास तीव्रगति से होता है।

रुक जाता है माता-पिता का बौद्धिक विकास

दूसरी तरफ माता-पिता का मानसिक-बौद्धिक विकास इस सोच के साथ रुक चुका होता है कि हम तो बहुत कुछ जान चुके हैं। बहुत सारे दम्पति तो 'बन्द खिड़की और बन्द दरवाज़े' की संस्कृति जीते हैं। कइयों की सारे दिन में व्यापार या नौकरी से जुड़े चन्द लोगों को छोड़कर किसी से कोई बात नहीं हो पाती। नाते-रिश्तेदारों से दूरियाँ हो चुकी होती हैं और मेहमानों का आना-जाना ना के बराबर होता है। ऐसे में बच्चा पड़ोसियों के घर की चहल-पहल

और दोस्तों के माता-पिता के सोशल व्यवहार को छिप-छिप कर देखता है और अपने घर में ऐसे मेल-जोल के अभाव से कुढ़ता भी है। वर्तमान के न्यूक्लीयर परिवारों में पति के दुकान या कार्यालय जाने के बाद बच्चे की माता (आम गृहिणी) तीनों समय के भोजन, कपड़े, सफाई या घर के अन्य कार्यों के दायरे में बन्धी-बन्धी लगभग एक जैसी दिनचर्या व्यतीत करती है। उसके पास भले ही एम.ए., बी.ए.या इनसे भी ऊँची डिग्री है पर वह तो कागज़ों के बीच एक कागज़ बन कर रह गई है। वह सोचती है, शादी हो गई, माँ बन गई, पति ठीक से कमाता है, खर्च चल रहा है, मुझे कोई नौकरी तो करनी नहीं, जो पढ़ा था वो पर्याप्त है। उत्पादों के लेबल पढ़ने से लेकर रोजमर्रा के अन्य भाषाई ज्ञान की ज़रूरत उसकी सहज पूरी हो रही होती है। फुर्सत के क्षणों में कोई

टी.वी.का मनोरंजक कार्यक्रम देख लेती है या मनोरंजन की पुस्तक पढ़ लेती है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। यदि बच्चा अपने दोस्त की माँ को अधिक ज्ञानमयी और प्रेममयी पाकर उसकी तरफ आकर्षित होता है या अपनी माँ के आगे उसके गुणों की प्रशंसा करता है तो माँ को ऐसे भी लगने लगता है कि बच्चा बिगड़ रहा है, दूसरों के घरों की ओर खिंचकर अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहा है पर वह यह नहीं समझ पाती कि उसके घर के 'एक जैसी पटरी पर चलते जीवन के' वे तो आदी हो चुके हैं पर संसार के हर सुख पर अपने हस्ताक्षर कर पाने की चाह वाला बच्चा नवीनता और बौद्धिक विकास को तृप्त करने वाले माहौल की तरफ आकर्षित होता है – यह स्वाभाविक बाल सुलभ प्रवृत्ति है, इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है।

नित नई जानकारियों का आगाज़

पिता का भी कमोबेश यही हाल है। जिस धन्धे में वह लगा है उसमें 8 या 10 या 12 घन्टे खप जाते हैं। नित्यकर्मों का निपटारा, कुछ आवश्यक पारिवारिक कार्यों की पूर्ति, किसी प्रिय मित्र-सम्बन्धी से उठ-बैठ, टी.वी., अखबार, नेट आदि की जानकारी में समय गुज़र जाता है। बच्चे के प्रति वे अपना इतना ही कर्त्तव्य समझते हैं कि हमने उसे अच्छे स्कूल में डाल दिया, वर्दी और पुस्तकों के साथ-साथ आने-जाने के लिए बस का प्रबन्ध कर दिया। सुबह तैयार करके स्कूल भेजना और शाम को लौटने पर होमवर्क करा देना, इतनी ज़िम्मेवारी माँ सम्भाले हुए है। इस प्रकार दोनों निश्चिन्त रहते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। परन्तु तीव्रगति से बदलते समय में नित्य नई सूचनाओं, जानकारियों का आगाज़ हो रहा है। मीडिया के खुलेपन से, नाटकों, धारावाहिकों, फिल्मों, कहानियों, समाचारों के माध्यम से वर्तमान समाज में शान, शौकत और गर्व की बात समझी जाने वाली चीज़ों से बच्चे बहुत जल्दी वाकिफ हो जाते हैं। साथियों की भेंट में अपने परिवार और प्राप्तियों की शान-शौकत या गर्व का पलड़ा थोड़ा भी हल्का महसूस होने पर वे हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं। माता-पिता को बच्चे के भीतर समय से पूर्व भरने वाली इन अनावश्यक जानकारियों का अहसास कम ही रहता है। उनके हाथों के तोते तो तब उड़ते हैं जब चारों ओर देखी-सुनी बात पर बच्चा दृढ़ होकर माता-पिता का भी सामना करने या अवज्ञा करने पर उतारू हो जाता है या हीन विचारों से ग्रसित हो मनोबल और आत्मविश्वास खोने लगता है।

भाई भाग्यविधाता नहीं होते

एक कन्या (8 वर्ष) ने घर में माँ को रोते-रोते कहा, आज मेरी सखी ने कहा, मेरा तो भाई है परन्तु तुम्हारा कोई भाई नहीं है, लगता है, तुम्हारा भाग्य अच्छा नहीं है। वह माँ ब्रह्माकुमारीज़ के केन्द्र पर आती है। उसने उदास चेहरे से बहनों से समाधान पूछा। बहनों ने कहा, भाई तो भारत की पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को भी नहीं था, ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती को भी नहीं था, द्वितीय मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को भी नहीं था, मर्दानी रानी झांसी को भी नहीं था। अपनी पुत्री को कहना, तुम्हारा भाग्य उन सबकी तरह बहुत ऊँचा है और आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से वह और अधिक ऊँचा बन सकता है। कोई भाई किसी बहन का भाग्यविधाता नहीं होता। भाग्यविधाता तो एक परमात्मा ही है। आज के समय में तो अधिकतर मामलों में बहनें, भाइयों को सहारा दिए हुए हैं। यह सुनकर माँ के चेहरे पर मुसकान आ गई। अवश्य ही माँ का स्वमान जागा तो उसने पुत्री का भी जगा दिया।

ऊँचे विचार बनते हैं स्वयं की पवित्र मेहनत से

ऐसे ही 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली जीवन शैली वाले एक राजयोगी पिता, स्कूल के विशेष कार्यक्रमों में सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर शामिल होते। उसकी बच्ची (10 वर्ष) की सखियाँ कहतीं, आपके पिता बूढ़े

हो गए हैं क्या, जो ऐसे कपड़े पहनते हैं, जींस क्यों नहीं पहनते? बात जब हम तक आई तो हमने कहा, यह तो भारत के बड़े-बड़े नेताओं का पहनावा रहा है। बच्ची को यह गर्व करना है कि मेरे पिता एक आध्यात्मिक नेता हैं जो घर में रहते उस आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करते हैं जो बड़े-बड़े संन्यासियों को भी दुर्लभ है। जींस तो कोई कम्पनी बनाती है, उसे पैसों में खरीदा जा सकता है और वह पैसा तो गलत तरीके से भी आ सकता है पर ऊँचे और कल्याणकारी विचार तो स्वयं की पवित्र मेहनत से बनते हैं, उन्हें खरीदा नहीं जा सकता। यह सुनकर माता और बच्ची आश्वस्त हो गई।

डगमगा जाता है आत्मविश्वास

एक कन्या (12 वर्ष) ने रोते हुए बताया कि मेरी माता हर समय दूसरे बच्चों से तुलना करते हुए मेरी कमियाँ निकालती रहती है। हालांकि वह प्रेम भी करती है परन्तु जब तुलना करती है तो मेरा आत्मविश्वास डगमगा जाता है, मैं खुद भी अपने को नकारा और अयोग्य समझने लगती हूँ। जब यह बात उसकी माँ को बताई गई तो वह रोने लगी और कहने लगी कि मुझे तो अपनी पुत्री से बहुत प्रेम है। प्रेम तो है पर जैसे अमृत के घड़े में पड़ी विष की एक बूंद ही उसे विषैला बना देती है इसी प्रकार माता-पिता का ज़रा-सा नकारात्मक रवैया भी बच्चों का सुख-चैन छीन लेता है।

माँ है प्रथम गुरु

ये सब उदाहरण देने के पीछे उद्देश्य यह है कि बच्चे के शरीर और पढ़ाई के दर्जे में वृद्धि होने के साथ-साथ उसके अमूर्त मन में भी तो बहुत-सी बातें भर रही हैं जो अन्दर खलबली पैदा करती हैं। माता-पिता की व्यस्तता के कारण बड़े होते बच्चे का मानसिक पहलू उपेक्षित है। यदि बच्चा स्कूल में देखी-सुनी बात, घटना, चीज़ (मोबाइल, कैमरा, गाड़ी, महंगा पेन, चश्मा) आदि का जिक्र करता है तो माँ का उत्तर होता है, करने दे उन्हें, तू अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। लेकिन देखते हुए भी ना देखने की शक्ति, रीस ना करने की शक्ति, किसी बात में हीन महसूस ना करने की शक्ति वह कहाँ से लाए। माँ तर्क के साथ, उदाहरण के साथ तो समझाती नहीं कि रीस को कैसे रोकें, क्रोध को कैसे मनेज करें, आकर्षण से कैसे बचें। माँ बच्चे की पहली गुरु है, तो गुरु के पास तो उसके हर प्रश्न का समाधान और सन्तुष्ट करने की शक्ति होनी चाहिए, तभी वह अच्छी गुरु सिद्ध होगी। अत: सफल मातृत्व और पितृत्व का निर्वाह करने के लिए आवश्यक है कि माता-पिता अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को रुकने न दें। वे वर्तमान परिस्थिति जन्य स्कूली वातावरण, सामाजिक वातावरण का आकलन करें। वे यह ना कहें, पढ़े तो हम भी थे, पर आज जैसी रोज़-रोज़ की नई-नई बातें हमारे पास तो थी नहीं। उन्हें बदलते समय को ध्यान में रखना पड़ेगा।

कहा जाता है, जीवन सदा सीखने के लिए है। सीखने, सिखाने, अन्दर झांकने, बच्चों की भावनाओं को समझने में ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान काफी मददगार साबित होता है। इन शाखाओं में ईश्वरीय ज्ञान के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान भी सिखाया जाता है। जो माता-पिता इन शाखाओं में आते हैं वे अपने बच्चों के प्रश्नों को सहज समझते हैं और उनकी जिज्ञासाओं को शान्त कर पाते हैं। एक तो उनका अपना दृष्टिकोण ज्ञानयुक्त हो जाता है, समाधान को पकड़ता है और फिर अनुभवी बहनों का मार्गदर्शन भी मिलता है। आध्यात्मिक स्नेह के वातावरण में बच्चे की एकाग्रता बढ़ती है, वह अपने को व्यर्थ बातों से हल्का महसूस करता है। इसलिए यह ना कहें कि बूढ़े तोते अब क्या पढ़ेंगे, बच्चों की संस्कारयुक्त पालना के लिए, बड़े होते बच्चे को और स्वयं को समस्याओं, प्रश्नों से पार ले जाने के लिए माता-पिता दोनों प्रतिदिन एक घन्टा ईश्वरीय ज्ञान सीखने ब्रह्माकुमारीज़ की नज़दीकी शाखा में ज़रूर जाएँ। बाल मनोविज्ञान को समझने और उनसे सामन्जस्य बिठाने का यह नि:शुल्क सरलतम उपाय है।